ज्ञान सागर

(कक्षा-छठी)

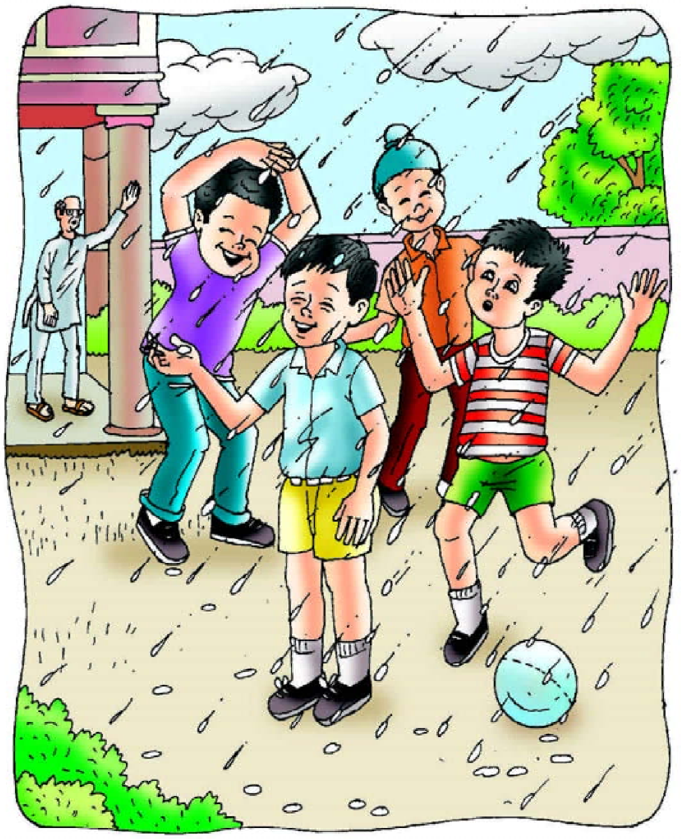

प्रकाशन विभाग

डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति

चित्रगुप्त मार्ग, नयी दिल्ली-110055

विषय-सूची

क्रम संख्या	पाठ	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	साथी हाथ बढ़ाना (कविता)	साहिर लुधियानवी	1
2.	चिट्ठी के अक्षर (कहानी)	व्यथित हृदय	4
3.	बरसते जल के रूप अनेक (कहानी)	शिवशंकर	11
4.	पुरस्कार (कहानी)	देवदत्त द्विवेदी	16
5.	*सीखो (कविता)	विनोद चंद्र पाण्डेय 'विनोद'	22
6.	अनोखा वरदान (कहानी)	मनोज दास	23
7.	सुंदर लाल (जीवनी)	–	29
8.	नजानू कवि बना (एकांकी)	निकोलाई नोसोव/कविता सुरेश	34
9.	दोहे (पद्य)	अब्दुर्रहीम 'खानखाना'	42
10.	पोंगल (निबंध)	–	45
11.	*तेनालीराम ने चोरों को उल्लू बनाया (कहानी)	–	50
12.	दस आमों की कीमत (कहानी)	आर.के. नारायण	52
13.	अनोखी दौड़ (पत्र)	–	58
14.	एक रोमांचक यात्रा (यात्रा-वृत्तांत)	जवाहर लाल नेहरू	63
15.	परिश्रम (कविता)	विनोद चंद्र पाण्डेय 'विनोद'	67
16.	*धान का महत्त्व (निबंध)	रमेश दत्त शर्मा	71
17.	यात्रा और यात्री (कविता)	हरिवंशराय बच्चन	75
18.	पंच परमेश्वर (कहानी)	प्रेमचंद	78
19.	*सिकंदर और साधु (कहानी)	व्यथित हृदय	85
20.	आया वसंत (कविता)	सोहनलाल द्विवेदी	88

* केवल पढ़ने के लिए हैं। परीक्षा में इनमें से सवाल नहीं पूछे जाएँगे।

1 साथी हाथ बढ़ाना

साथी हाथ बढ़ाना
एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना।
साथी हाथ बढ़ाना।

हम मेहनतवालों ने जब भी, मिलकर कदम बढ़ाया,
सागर ने रस्ता छोड़ा, **परबत** ने **सीस** झुकाया,
फ़ौलादी हैं सीने अपने, फ़ौलादी हैं बाँहें,
हम चाहें तो चट्टानों में पैदा कर दें राहें,
साथी हाथ बढ़ाना।

मेहनत अपने लेख की रेखा, मेहनत से क्या डरना,
कल **गैरों** की खातिर की, आज अपनी खातिर करना,
अपना दुख भी एक है साथी, अपना सुख भी एक,
अपनी मंज़िल सच की मंज़िल, अपना रस्ता नेक,
साथी हाथ बढ़ाना।

एक से एक मिले तो कतरा, बन जाता है दरिया,
एक से एक मिले तो **ज़र्रा**, बन जाता है **सेहरा**,
एक से एक मिले तो राई, बन सकती है परबत,
एक से एक मिले तो इंसाँ, बस में कर ले किस्मत,
साथी हाथ बढ़ाना।

–साहिर लुधियानवी

शब्दार्थः परबत–पर्वत; **सीस**–शीश, सिर; **फ़ौलादी**–फ़ौलाद (लोहे) से बना बहुत कड़ा या मज़बूत; **गैरों**–पराए; **ज़र्रा**–छोटा कण; **सेहरा**–रेगिस्तान

अभ्यास

कविता में से

1. मेहनत करने वाले मनुष्यों के मिलकर कदम बढ़ाने से सागर और पर्वत क्या करते हैं?
2. मेहनती व्यक्तियों का रास्ता और मंज़िल कौन-सी होती है?
3. **उचित उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–**

   (क) इंसान के अपने लेख की रेखा क्या है?

   ☐ आराम ☐ मेहनत ☐ कोशिश ☐ सहजता

   (ख) एक से एक कतरा मिले तो क्या बन जाता है?

   ☐ दरिया ☐ रास्ता ☐ धरती ☐ आकाश

4. **कविता की पंक्तियाँ पूरी कीजिए–**

   (क) फ़ौलादी हैं .... अपने, फ़ौलादी हैं बाहें
   हम चाहें तो .... में पैदा कर दें राहें

   (ख) .... गैरों की खातिर की, आज .... खातिर करना
   अपना .... भी एक है साथी, अपना .... भी एक

बातचीत के लिए

1. 'हम चाहें तो चट्टानों में पैदा कर दें राहें'–इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं?
2. आप किन्हें अपना साथी मानते हैं और क्यों?
3. आप साथियों के साथ मिलकर कौन-कौन से काम कर सकते हैं?
4. 'साथी हाथ बढ़ाना' पंक्ति का क्या भाव है? आपने कब-कब दूसरों की सहायता के लिए हाथ आगे बढ़ाया है? किसी एक घटना के बारे में बताइए।

अनुमान और कल्पना

1. यदि कोई व्यक्ति अकेला ही सारे काम करेगा तो क्या होगा?
2. किन अवसरों पर लगता है कि सबका सुख-दुख एक हो गया है, बताइए।

भाषा की बात

1. **'मिल' + 'कर' जोड़ने से 'मिलकर' शब्द बना है। अब आप भी तीन शब्दों में 'कर' जोड़कर नए शब्द बनाइए–**

(क) .... + कर = ...

(ख) .... + कर = ...

(ग) .... + कर = ...

2. **'हाथों के तोते उड़ना'–हाथ से संबंधित मुहावरा है। अब आप 'हाथ' पर तीन मुहावरे ढूँढ़कर लिखिए और उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए–**

(क) **मुहावरा** – ....

वाक्य – ....

(ख) **मुहावरा** – ....

वाक्य – ....

(ग) **मुहावरा** – ....

वाक्य – ....

जीवन मूल्य

- साथी हाथ बढ़ाना
  एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना।
- मेहनत अपने लेख की रेखा, मेहनत से क्या डरना
- एक से एक मिले तो इंसाँ, बस में कर ले किस्मत

1. क्या कवि ने सबको मिलकर मेहनत करके किस्मत बदलने की बात कही है?
2. क्या कवि का ऐसा संदेश देना उचित है? उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।

कुछ करने के लिए

1. फ़िल्म 'नया दौर' व उसमें इस गीत के फ़िल्मांकन को देखिए।
2. कक्षा में इस गीत को मिलकर गाइए।

2

चिट्ठी के अक्षर

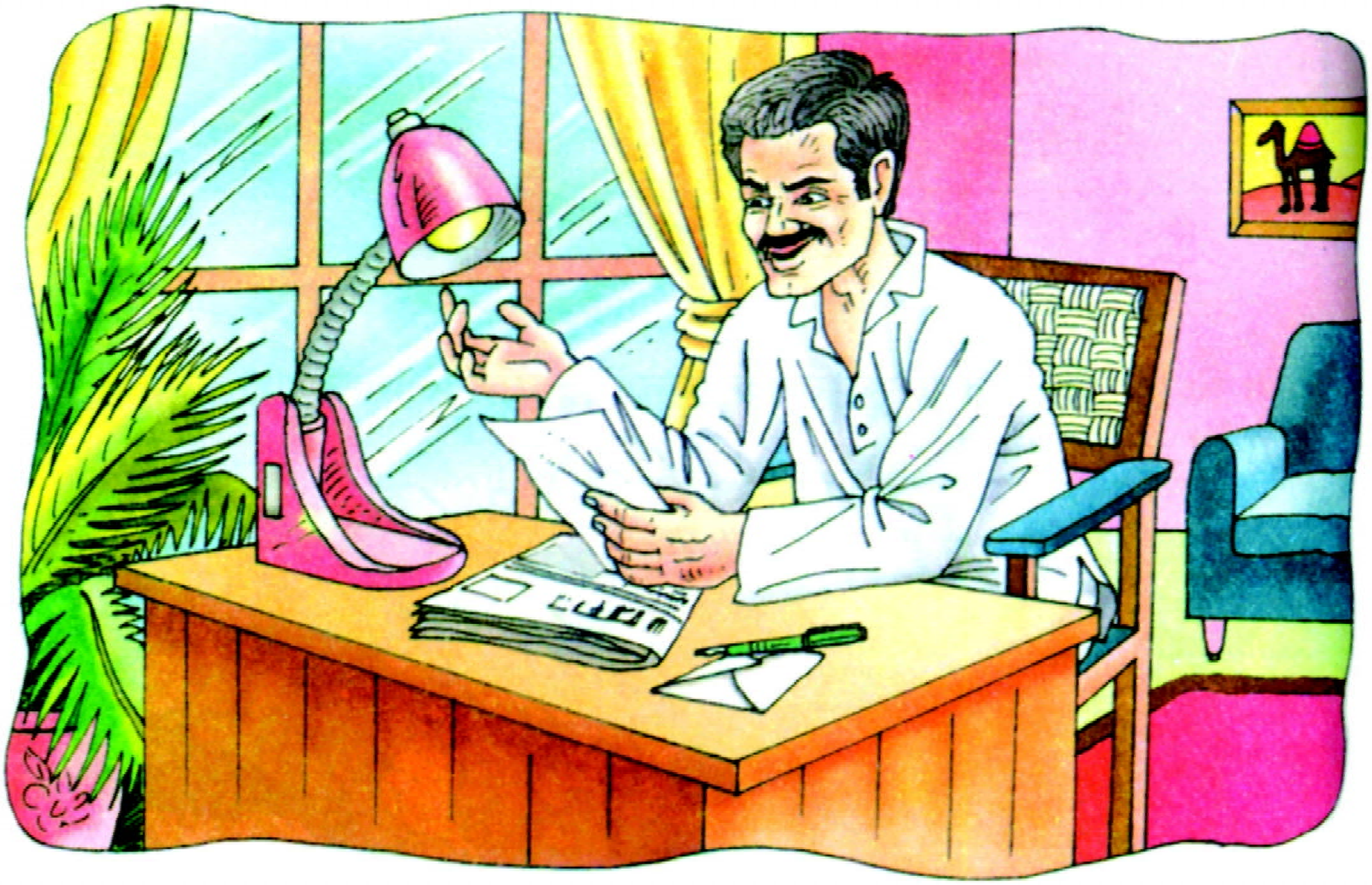

सुबह के दस बज रहे थे। मुझे डाक से एक चिट्ठी मिली। मैं लिफ़ाफ़ा खोलकर चिट्ठी पढ़ने लगा–कृपा करके मेरे अख़बार के लिए एक कविता भेज दीजिए। चिट्ठी के नीचे संपादक के हस्ताक्षर थे। संपादक का नाम महिपाल सिंह था। चिट्ठियाँ तो बराबर ही आती रहती हैं, पर इस चिट्ठी ने मेरे मन को अपनी ओर खींच लिया। इसका कारण यह था कि चिट्ठी की लिखावट बड़ी सुंदर थी। हर अक्षर साँचे में ढला हुआ-सा मालूम पड़ता था।

महिपाल सिंह से मेरी कोई जान-पहचान नहीं थी। यह उनकी पहली चिट्ठी थी। लिखावट देखकर मेरे मुँह से **अनायास** ही निकल पड़ा, "वाह! बड़ी सुंदर लिखावट है।"

मैंने दूसरे ही दिन कविता भेज दी।

कविता अख़बार में छपी। जिस अंक में छपी, वह अंक भी मेरे पास आया।

शब्दार्थः **अनायास**–अचानक, एकाएक

पूरे बत्तीस पेज का साप्ताहिक अख़बार था। शुरू से लेकर अंत तक गाँव की ही बातें छपी थीं। बड़े सुंदर ढंग से सात दिनों के समाचार छाँट-छाँटकर छापे गए थे। किसानों के लिए जानकारी की बहुत-सी बातें भी थीं।

मैं अख़बार को देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ और दूसरे अंक के लिए फिर एक कविता भेज दी।

दूसरी कविता भी अख़बार में छपी। अब मैं बराबर कविता भेजने लगा। महिपाल सिंह की चिट्ठियाँ भी समय-समय पर आया करती थीं। वे कभी कविता माँगते थे और कभी कहानी। मैं बराबर उनकी इच्छाओं की पूर्ति कर दिया करता था। इसका परिणाम यह हुआ कि हम दोनों के मन में एक-दूसरे के लिए प्रेम पैदा हो गया। लगभग साल-डेढ़ साल बीत गया। महिपाल सिंह ने अपने एक पत्र में लिखा—यदि आपका कभी इधर आना हो, तो मेरे ही घर ठहरने की कृपा करें। मैंने भी उत्तर में उन्हें लिख दिया—यदि उधर आना हुआ तो आपके दर्शन ज़रूर करूँगा।

संयोग की बात, दो-ढाई महीने बाद मुझे उधर एक शादी में जाना पड़ा। मैंने अपने आने की सूचना महिपाल सिंह को दे दी। **नियत** तिथि पर मैं उस ओर बारात में सम्मिलित होने के लिए गया। जब बारात से छुट्टी पा गया तो महिपाल सिंह के घर गया। महिपाल सिंह अपने घर के बाहरी कमरे में कुर्सी पर बैठकर मेज़ के सहारे कुछ लिख रहे थे। मैंने दरवाज़े पर खड़े होकर पूछा, ''क्या महिपाल सिंह जी हैं?''

महिपाल सिंह ने कुर्सी पर बैठे-ही-बैठे मेरी ओर देखते हुए पूछा, ''आप कौन हैं?''

मैंने उत्तर दिया, ''मेरा नाम अखिलेश शर्मा है।'' महिपाल सिंह उछल पड़े। उन्होंने तेज़ी के साथ आगे बढ़कर मुझे पकड़कर हृदय से लगा लिया और कहा, ''अरे शर्मा जी, आप! क्षमा कीजिएगा।''

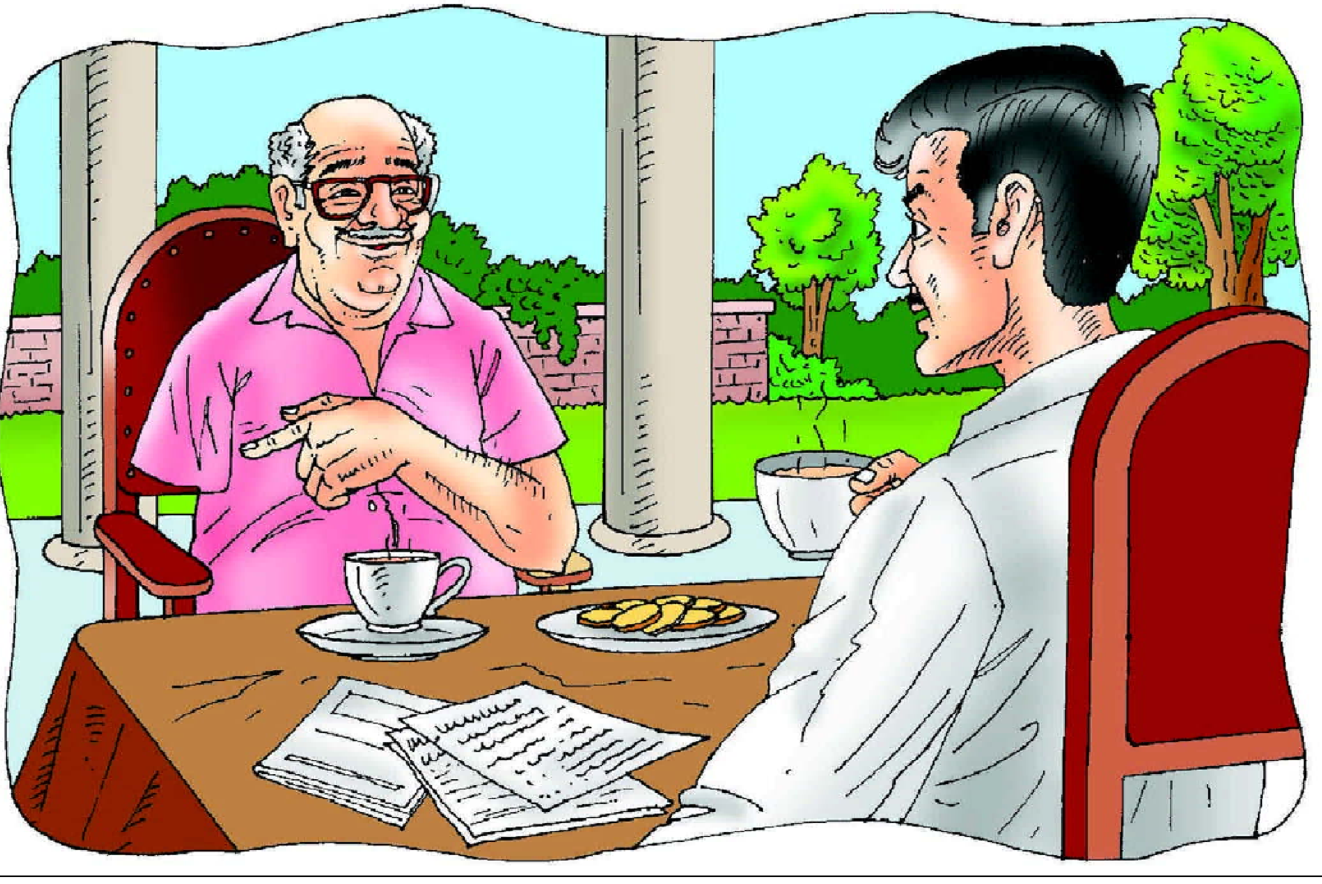

शब्दार्थ: नियत—निश्चित

मैं कुछ कहना ही चाहता था कि मेरी दृष्टि उनके हाथों पर पड़ी। उनका एक ही हाथ था–बायाँ। दायाँ हाथ कंधे तक कटा हुआ था। मैं आश्चर्यचकित होकर उनकी तरफ़ देखने लगा। वे बड़े खुश थे, बड़े स्वस्थ थे। एक क्षण में ही मेरे मस्तिष्क में अनेक प्रश्न कौंधने लगे–''क्या वह लिखावट इसी आदमी की थी? क्या यह बाएँ हाथ से इतने सुंदर अक्षर लिखता है?''

मैं महिपाल सिंह की ओर टकटकी लगाए देखता रहा। तब महिपाल सिंह ने पूछा, ''क्या देख रहे हैं? क्या यह कि आपको चिट्ठियाँ भेजने वाला महिपाल एक हाथ का आदमी है। अरे भाई, यह जीवन है। जीवन में क्या हो सकता है, कोई कुछ नहीं जानता।''

''आप तो मेरे मन की बात भाँप गए। मैं सचमुच यही सोच रहा था कि क्या आदमी बाएँ हाथ से भी इतने सुंदर अक्षर लिख सकता है?''

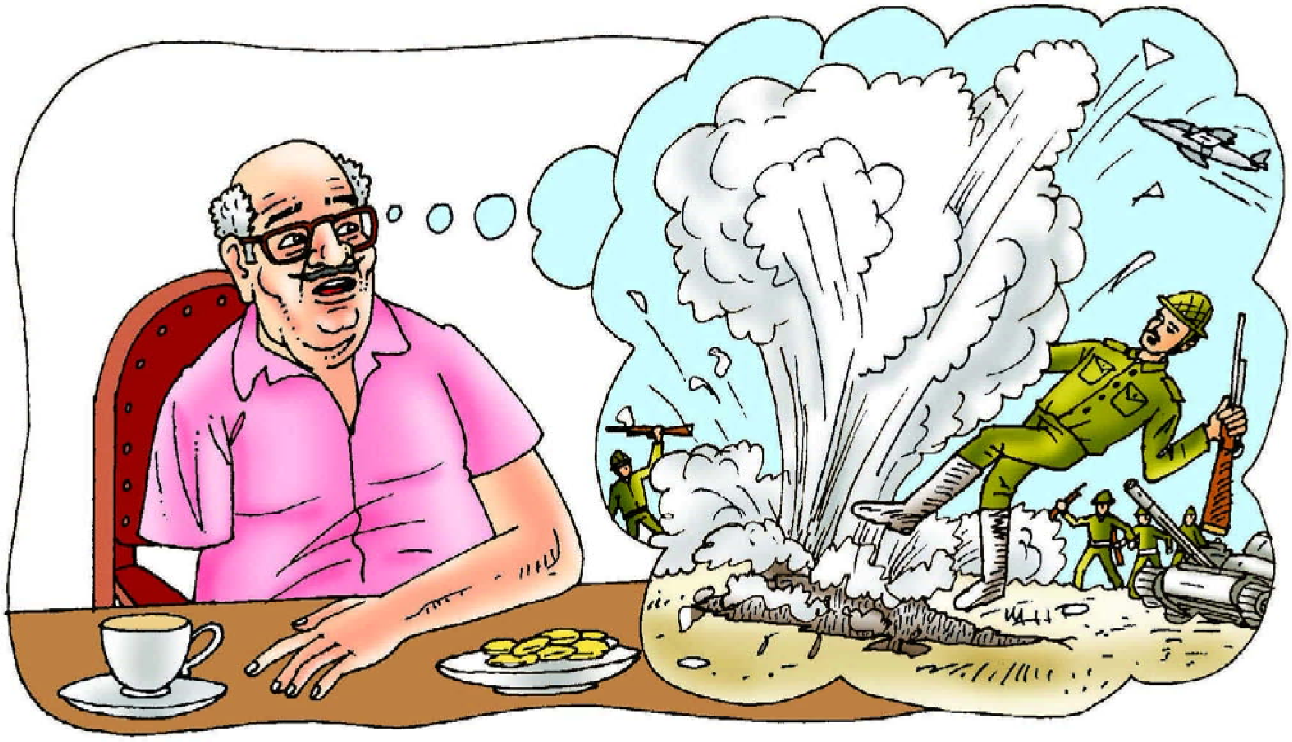

महिपाल सिंह ने जवाब दिया, ''शर्मा जी, दाएँ-बाएँ में कुछ फ़र्क नहीं होता। जो गुण दाएँ हाथ में होता है वही बाएँ हाथ में भी होता है। यह तो व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह किस हाथ से काम करता है।''

हाथ-मुँह धोने के बाद जब मैं महिपाल सिंह के साथ चाय पीने लगा, तो मैंने उनसे पूछा, ''ठाकुर साहब, आप बाएँ हाथ से कब से लिख रहे हैं?''

महिपाल सिंह विचारों में डूब गए। कुछ देर तक सोचते रहे, फिर बोले, ''इस वर्ष मेरी उम्र पचपन वर्ष की है। मैं चालीस वर्ष की उम्र तक फ़ौज में था। निशाना मारने में बड़ा तेज़ था। बाएँ और दाएँ–दोनों हाथों से **सटीक** निशाना मारता था।''

शब्दार्थः सटीक–ठीक-ठाक, जैसा चाहिए वैसा

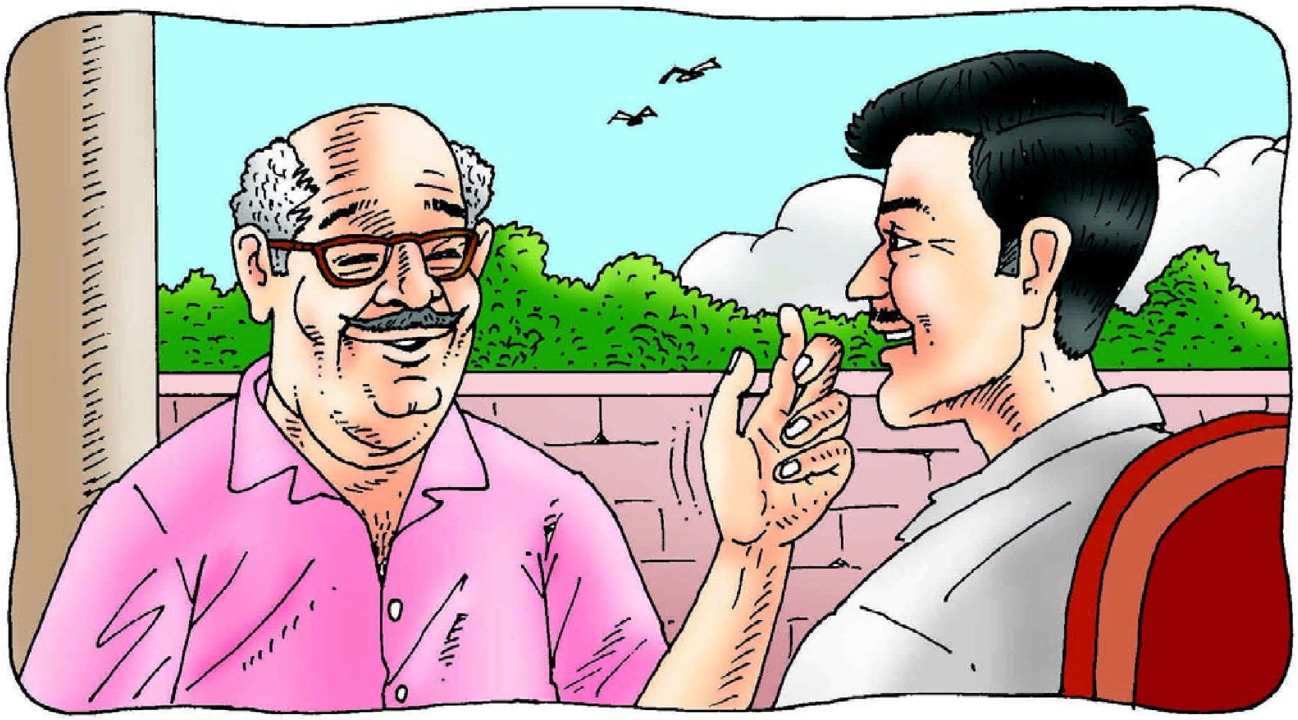

"संयोग की बात थी कि मुझे एक मोर्चे पर जाना पड़ा। एक दिन जब शत्रु को अपनी गोलियों का निशाना बना रहा था तो पास ही एक बम फटा और मेरा दाहिना हाथ कंधे तक उड़ गया। मैं गिर पड़ा। मुझे अस्पताल ले जाया गया। महीनों अस्पताल में पड़ा रहा। जब अच्छा हुआ तो सरकार ने मुझे पेंशन देकर सेवा से मुक्त कर दिया। सरकार ने मुझ से पूछा, "सेवा से मुक्त होने पर मैं कौन-सा काम करूँगा?"

मैंने उत्तर दिया, "मैं पहले कुछ पढ़ूँगा-लिखूँगा और फिर उसके बाद एक अख़बार निकालूँगा।" सरकार ने मेरे पढ़ने-लिखने और अख़बार निकालने का पूरा इंतज़ाम कर दिया।

"मैं घर आकर बाएँ हाथ से लिखने का अभ्यास करने लगा। चार-पाँच साल तक मैं अभ्यास में ही लगा रहा। मैंने बहुत-सी कविताएँ लिखीं, कहानियाँ लिखीं और लेख लिखे। वे सभी चीज़ें मेरे पास मौजूद हैं। मेरी लिखावट उसी अभ्यास का परिणाम है। जब मैं लिखने में **दक्ष** हो गया तो अख़बार निकालने लगा। अब आप देख ही रहे हैं कि पूरे बत्तीस पेज का अख़बार हर सप्ताह निकालता हूँ।"

महिपाल सिंह अपनी बात खत्म करने के बाद उठे। उन्होंने चार-पाँच साल तक अभ्यास के रूप में लिखी हुई अपनी रचनाएँ अलमारी से निकालकर मेरे सामने रख दीं। मैं उनकी रचनाओं को देखने लगा—टेढ़े-मेढ़े अक्षर, दूर-दूर अक्षर, अलग-अलग अक्षर, फिर सुधरे हुए और फिर गोल-गोल सुंदर अक्षर तथा साँचे में ढले हुए अक्षर।

मैं मुग्ध होकर बोल उठा, "ठाकुर साहब, आप धन्य हैं। मैंने बचपन में पढ़ा था—रसरी आवत जात तै, सिल पर परत निसान। मगर आज अपनी आँखों से **प्रत्यक्ष** देख भी लिया।" इतना कहने के बाद मैंने महिपाल सिंह जी से विदा ली।

—व्यथित हृदय

शब्दार्थः दक्ष—निपुण, कुशल; **प्रत्यक्ष**—आँखों के सामने

अभ्यास

पाठ में से

1. महिपाल सिंह द्वारा छापे गए साप्ताहिक समाचार-पत्र में क्या-क्या छपता था?
2. महिपाल सिंह ने लेखक को अपने घर आने का निमंत्रण क्यों दिया?
3. महिपाल सिंह से मिलने के बाद लेखक के मस्तिष्क में कौन-से प्रश्न कौंधने लगे?
4. महिपाल सिंह ने बाएँ हाथ से लिखने का अभ्यास किस प्रकार किया?

5. **उचित उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाइए–**

(क) अखिलेश शर्मा जी को मिली चिट्ठी में उन्हें अख़बार के लिए क्या लिखकर भेजने को कहा गया था?

☐ जीवनी ☐ कविता ☐ कहानी ☐ संस्मरण

(ख) चिट्ठी के नीचे किसके हस्ताक्षर थे?

☐ लेखक ☐ निर्देशक ☐ संपादक ☐ कवि

6. **पाठ के आधार पर नीचे कुछ कथन दिए गए हैं। सही कथनों के सामने सही (✓) का निशान और गलत कथनों के सामने गलत (×) का निशान लगाइए–**

(क) महिपाल सिंह चालीस वर्ष की उम्र तक फ़ौज में थे। ☐

(ख) एक बस दुर्घटना में उन्होंने अपना हाथ खो दिया। ☐

(ग) महिपाल सिंह दैनिक अख़बार के संपादक थे। ☐

(घ) महिपाल सिंह की लिखावट बहुत सुंदर थी। ☐

(ङ) महिपाल सिंह ने अपने कार्यालय में अखिलेश शर्मा को बुलाया था। ☐

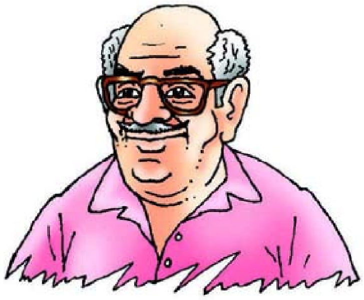

बातचीत के लिए

1. चिट्ठी भेजने और प्राप्त करने के कौन-कौन से तरीके हैं?
2. आप चिट्ठी भेजने के लिए किस तरीके का इस्तेमाल करते हैं? उस तरीके की प्रक्रिया समझाइए।
3. आप कौन-सा समाचार-पत्र पढ़ते है? क्यों?
4. महिपाल सिंह ने अपना दायाँ हाथ कैसे खो दिया?

अनुमान और कल्पना

1. यदि महिपाल सिंह अपना दायाँ हाथ खोने के बाद निराश हो जाते तो क्या होता?
2. यदि लिखावट सुंदर न हो तो उसके क्या-क्या परिणाम हो सकते है?
3. 'चिट्ठी के अक्षर' कहानी के लिए कोई और शीर्षक बताइए।

भाषा की बात

1. नीचे दिए गए वाक्यों को सही उतार-चढ़ाव के साथ पढ़िए–

(क) वाह! बड़ी सुंदर लिखावट है।

(ख) आप कौन है?

(ग) क्या देख रहे हैं?

(घ) अरे भाई, यह जीवन है।

(ङ) अरे शर्मा जी, आप! क्षमा कीजिएगा।

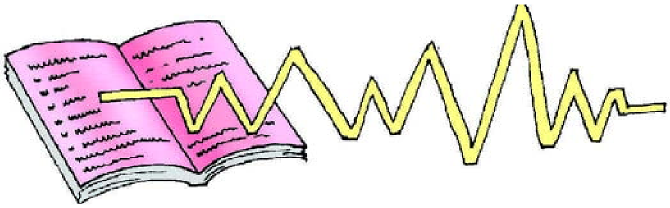

2. नीचे दिए गए शब्द-समूहों में से विशेषण व विशेष्य अलग-अलग करके लिखिए–

	विशेषण	विशेष्य
(क) एक चिट्ठी	एक	चिट्ठी
(ख) सुंदर लिखावट	....	....
(ग) साप्ताहिक अख़बार	....	....
(घ) नियत तिथि	....	....

3. शिक्षक या सहपाठियों की मदद से दोहा पूरा कीजिए–

....

रसरी आवत जात तै, सिल पर परत निसान।।

जीवन मूल्य

- महिपाल सिंह ने अपने जीवन में आई मुश्किल परिस्थिति का सामना दृढ़ निश्चय से किया और अपने अथक प्रयास से अपनी लिखावट को सुंदर बनाया तथा साप्ताहिक अख़बार निकाला।

  1. आपको महिपाल सिंह के जीवन से क्या प्रेरणा मिलती है?
  2. आप अपने जीवन में आई मुश्किल परिस्थिति का सामना कैसे करेंगे?

कुछ करने के लिए

1. दैनिक हिंदी समाचार-पत्रों के नाम लिखिए–

....

....

....

....

....

2. किन्हीं तीन हिंदी समाचार-चैनलों के नाम लिखिए–

....

....

....

3. पुरानी हिंदी अख़बारों में से अपनी पसंद के विषय, जैसे–विज्ञापन, खेल-समाचार, मनोरंजन, कविता, सिनेमा आदि के बारे में जानकारी इकट्ठा करके उन्हें स्क्रैप बुक में चिपकाइए। कक्षा में अपने दोस्तों को इस जानकारी के बारे में बताइए।

3

बरसते जल के रूप अनेक

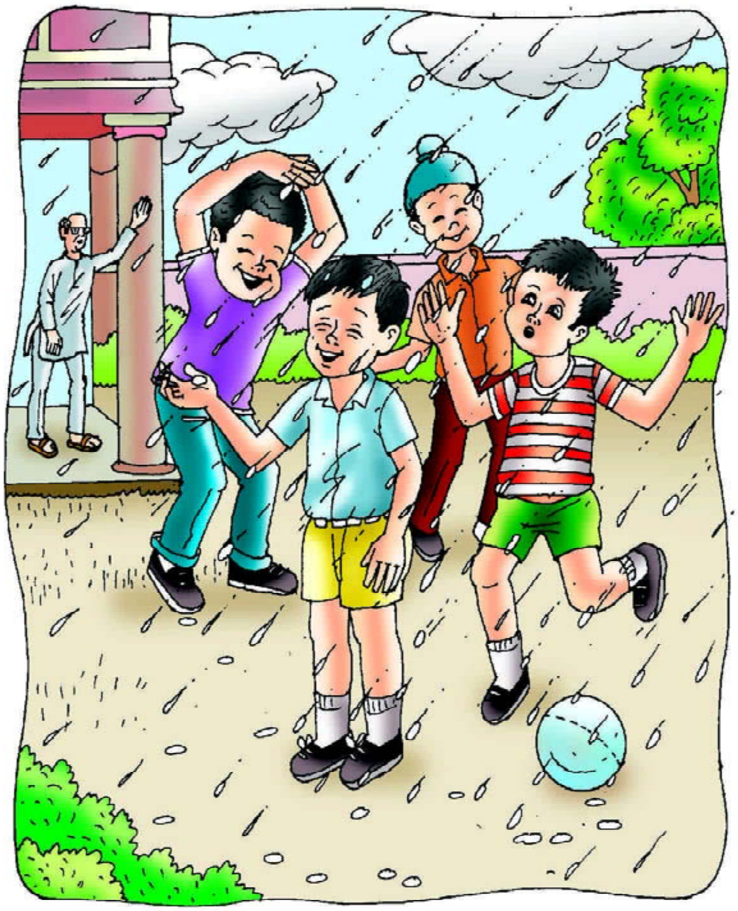

आकाश बादलों से ढका था, ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी। ऐसे सुहावने मौसम में राघव, परमीत, ज़फ़र और अमन मैदान में खेल रहे थे। अमन के दादाजी दूर से बच्चों को खेलते हुए देख रहे थे। वे बहुत प्रसन्न थे कि सभी बच्चे आपस में मिल-जुलकर खेल रहे हैं। गेंद से खेलने का सिलसिला अभी शुरू ही हुआ था कि अचानक बिजली चमकने लगी। कुछ ही देर में बादल भी गरजने लगे। दादाजी ने हाथ हिलाते हुए बच्चों को वापस आने का संकेत दिया। अमन की नज़र दादाजी पर पड़ी। उसने अपने साथियों को बताया, ''देखो! दादाजी बुला रहे हैं।'' इतने में राघव के गाल पर कुछ 'टप' से गिरा। ''अरे! यह गोली-सा क्या है?''

बारिश शुरू हो गई थी। दादाजी ज़ोर से बोले, ''बच्चो! चलो। ओले पड़ रहे हैं।'' अमन, राघव, परमीत और ज़फ़र सिर पर हाथ रखे अमन के घर की ओर दौड़ पड़े।

दादाजी ने चश्मा उतारा और वे बाहर बरामदे में ही अपनी आराम कुर्सी पर बैठ गए। दादाजी बोले, ''बच्चो! आज बहुत दिन बाद ओले पड़े हैं। अच्छा हुआ, तुम सब चले आए, नहीं तो सिर पर टपाटप होती।'' बच्चे दादाजी की बात सुनकर खिलखिलाकर हँस दिए। देखते-ही-देखते बरामदे के आगे का खुला स्थान ओलों से भर गया। राघव ने दादाजी से पूछा, ''दादाजी, ये ओले क्या होते हैं?''

दादाजी मुसकुराए और बोले, ''बच्चो! वायुमंडल में **विद्‌यमान** जल की बूँदें झटके से उछलकर ऊपर चली जाती हैं। ऊपर की हवा बहुत ठंडी होती है। ये बूँदें वहीं जमकर ओले का रूप धारण कर लेती हैं। इसी प्रकार हवा के झोंके इन्हें और ऊपर उछाल देते हैं। इन ओलों के ऊपर बर्फ़ की और परतें जम जाती हैं। कुछ भारी होने पर ये

शब्दार्थ: विद्‌यमान–उपस्थित

ओले नीचे की ओर गिरने लगते हैं।'' ''वाह! दादाजी, मुझे तो यह मालूम ही नहीं था।'' सभी बच्चे बहुत खुश हुए। दादाजी ने बच्चों से पूछा, ''क्या तुमने 'पाला' पड़ता देखा है?'' ''पाला!'' सभी बच्चे एक साथ बोले। दादाजी ने कहा, ''सरदियों में तुमने देखा होगा कि खेतों में सुबह-सुबह बर्फ़ की एक चादर-सी दिखाई देती है। यही 'पाला' है। जब ठंड अधिक पड़ने लगती है तब हवा में मौजूद भाप जम जाती है और बर्फ़ की चादर के रूप में दिखाई पड़ती है।'' ''वाह! दादाजी, यह भी जल का ही एक रूप है।'' दादाजी ने समझाया कि जल जीवन तो है ही इसके रूप भी अनेक हैं। इतने में अमन दादाजी के लिए चाय ले आया और दोस्तों के लिए गरमा-गरम पकौड़े।

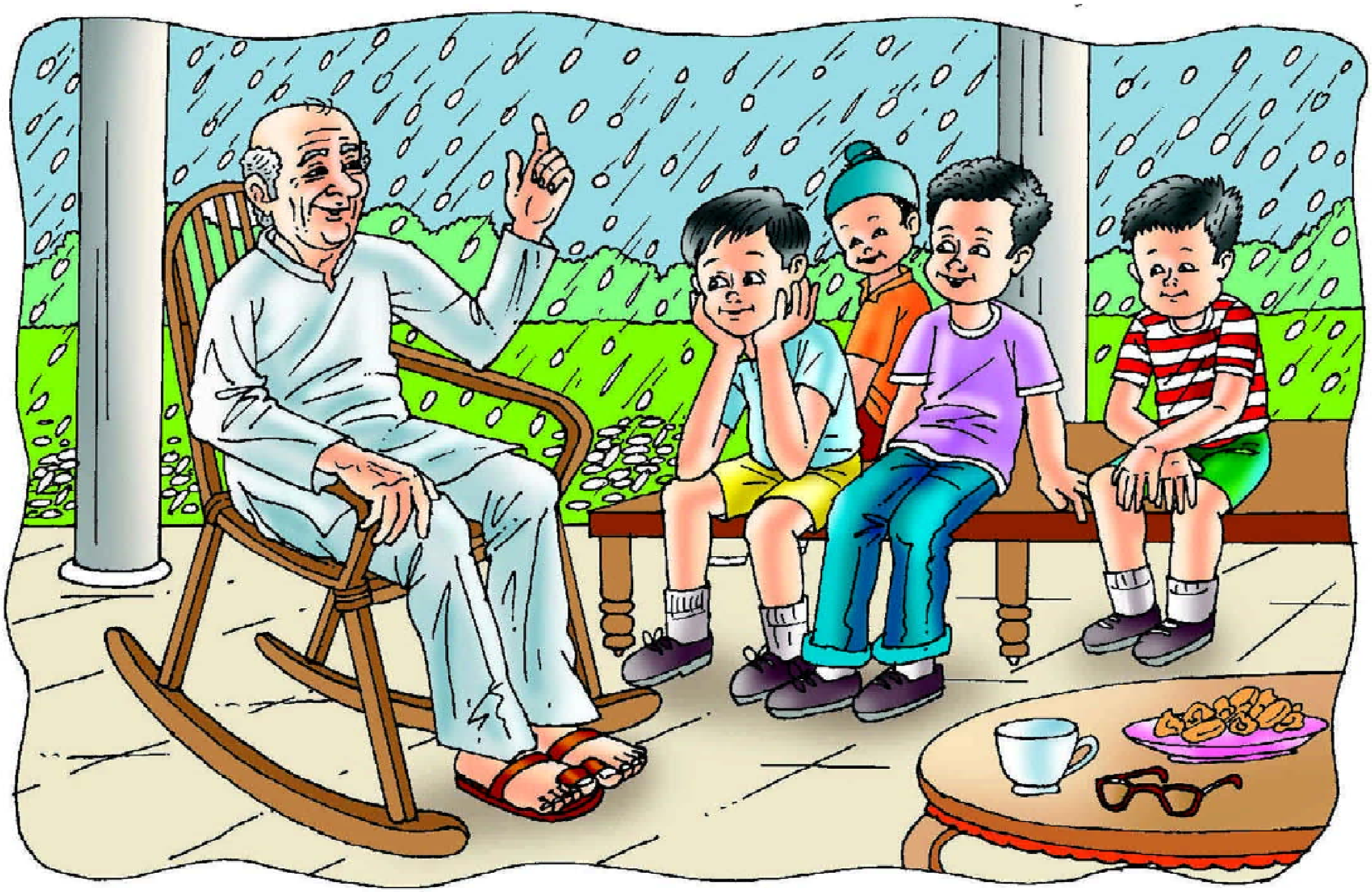

चारों बच्चे खुश थे क्योंकि दादाजी के पास उनके बहुत-से सवालों के जवाब थे। परमीत ने कहा, ''दादाजी, पहाड़ों पर जो बर्फ़ गिरती है उसके बारे में भी कुछ बताइए।'' दादाजी यह सुनकर मुसकुराए। दादाजी ने कहा, ''परमीत! पहाड़ ऊँचाई पर होते हैं न, सो वहाँ ठंड भी अधिक पड़ती है। शीत ऋतु में और अधिक ठंड के कारण वहाँ के वायुमंडल में भाप बर्फ़ के रूप में बदल जाती है। यही बर्फ़ जब पहाड़ों पर बरसती है तो इसे 'हिमपात' कहते हैं।'' अब ओले पड़ना बंद हो गया था। हल्की फुहारें-सी पड़ रही थीं। बच्चे ऐसे सुहावने मौसम में मज़े से पकौड़े खा रहे थे और बूंदों की ताल के संग उनका मन-मयूर नाच रहा था।

–शिवशंकर

अभ्यास

पाठ में से

1. दादाजी ने हाथ हिलाते हुए बच्चों को वापस आने का संकेत क्यों दिया?
2. दादाजी ने बारिश का आनंद कैसे लिया?
3. 'पाला' क्या होता है?
4. हिमपात कहाँ और कब होता है?

5. नीचे कुछ कथन दिए गए हैं। पाठ के आधार पर लिखिए कि ये कथन किसने कहे और किससे कहे–

कथन	किसने कहा	किससे कहा
(क) देखो! दादाजी बुला रहे हैं।	…………………………	…………………………
(ख) आज बहुत दिन बाद ओले पड़े हैं।	…………………………	…………………………
(ग) ये ओले क्या होते हैं?	…………………………	…………………………

6. पाठ के आधार पर नीचे दिए गए रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) बच्चो! चलो। ………………………… पड़ रहे हैं।

(ख) इतने में राघव के गाल पर कुछ ………………………… से गिरा।

(ग) कुछ ही देर में बादल भी ………………………… लगे।

(घ) हल्की …………………………–सी पड़ रही थीं।

बातचीत के लिए

1. आपको कौन-सा खेल पसंद है? इस खेल को आप किसके/किनके साथ खेलना पसंद करेंगे?
2. आपको सबसे अच्छा मौसम कौन-सा लगता है और क्यों?
3. बरसात होने पर आप क्या-क्या करते हैं?
4. ओलों के बनने और गिरने के बारे में दादाजी ने क्या बताया?

अनुमान और कल्पना

1. अगर आप पहाड़ों पर घूमने गए हैं और अचानक हिमपात हो जाता है तो क्या होगा?
2. वर्षा न होने पर क्या होगा?

भाषा की बात

1. **पाठ में आए 'ज़ोर' तथा 'बर्फ़' शब्दों में नुक्ते वाले अक्षर 'ज़' और 'फ़' का प्रयोग हुआ है। अब आप अपनी ओर से इनका प्रयोग करके चार-चार शब्द लिखिए–**

   ज़ – ....

   फ़ – ....

2. **दादाजी ने चश्मा उतारा और वे बाहर बरामदे में आराम कुर्सी पर बैठ गए। इस वाक्य में 'वे' सर्वनाम 'दादाजी' संज्ञा के लिए आया है। अब आप पाठ में से कोई चार सर्वनाम शब्द छाँटकर लिखिए–**

   (क) .... (ग) ....

   (ख) .... (घ) ....

3. **कुछ दिनों से बादल छाए हुए हैं। मगर बारिश नहीं हो रही है। इस विषय पर चित्रा और मानसी के बीच होने वाली बातचीत की कल्पना कीजिए और उन्हें संवाद के रूप में लिखिए–**

   चित्रा – मानसी! लगता है, आज बारिश ज़रूर होगी।

   मानसी – मुझे तो ऐसा नहीं लगता।

   चित्रा – क्यों?

   मानसी – ....

   चित्रा – ....

   मानसी – ....

   चित्रा – ....

   मानसी – ....

जीवन मूल्य

- दादाजी ने समझाया कि जल ही जीवन है और उसके कुछ रूपों के बारे में जानकारी भी दी।

  1. क्या आपको लगता है कि जल ही जीवन है? क्यों?

  2. हमें जल का संरक्षण कैसे करना चाहिए?

कुछ करने के लिए

1. तीन दिनों का दिल्ली का सबसे अधिक और सबसे कम तापमान का ब्यौरा लिखिए–

दिनांक	सबसे अधिक तापमान	सबसे कम तापमान

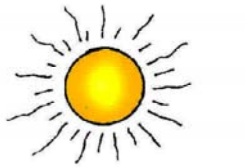

2. छह ऋतुओं की सूची तैयार कीजिए–

....

....

3. किसी एक ऋतु पर छह-आठ पंक्तियों की स्वरचित कविता भी लिखिए–

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

4. जल संरक्षण पर एक स्लोगन बनाकर कक्षा में लगाइए।